ॐ

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-नवम् **विषय-हिन्दी**

दिनांक-28/05/2020 **क्षितिज-गद्य खंड**

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

शुभ प्रभात बच्चों,

आपका दिन मंगलमय हो! आपने कल के पाठ को अच्छी तरह पढ़ लिया होगा। कल हमने आपको राहुल सांकृत्यायन की जीवनी से परिचित करवाया था। उनकी जीवनी को आपने अपनी कॉपी में उतार लिया होगा एवं उसे जरूर याद कर लिया होगा। अब हम लोग चलते हैं, विषय -वस्तु पर ।आज का विषय- वस्तु है, 'लहासा की ओर'का विस्तारपूर्वक अधययन । प्यारे बच्चों, आज हम लोग इसका पठन-पाठन करते हैं कहानी इस प्रकार है ,
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

ल्हासा की ओर

---राहुल सांकृत्यायन

वह नेपाल से तिब्बत जाने का मुख्य रास्ता है। फरी-कलिङ्पोङ् का रास्ता जब नहीं खुला था,तो नेपाल ही नहीं हिंदुस्तान की भी चीजें इसी रास्ते तिब्बत जाया करती थीं। ।यह व्यापारिक ही नहीं सैनिक रास्ता भी था, इसीलिए जगह- जगह फौजी चौकियाँ और किले बने हुए हैं ,जिनमें कभी चीनी पलटन रहा करती थी। आजकल बहुत से फ़ौजी मकान गिर चुके हैं ।दुर्ग के किसी भाग में, जहाँ किसानों ने अपना बसेरा बना लिया है, वहाँ घर कुछ आबाद दिखाई पड़ते हैं ।ऐसा ही परित्यक्त एक चीनी किला था ।हम वहाँ चाय पीने के लिए ठहरे। तिब्बत में यात्रियों के लिए बहुत सी तकलीफ़ें भी हैं और कुछ आराम की बातें भी। वहां जाति- पाँति, छुआछूत का सवाल ही नहीं है और न औरतें पर्दा ही करती

हैं। बहुत निम्नश्रेणी के भिखमंगों को लोग चोरी के डर से घर के भीतर नहीं आने देते; नहीं तो आप बिल्कुल घर

के भीतर चले जा सकते हैं ।चाहे आप बिल्कुल अपरिचित हों, तब भी घर की बहू या सासु को अपनी झोली में से चाय दे सकते हैं। वह आपके लिए उसे पका देगी। मक्खन और सोडा - नमक दे दीजिए, वह चाय चोडी में कूटकर उसे दूध वालीचाय के रंग की बना के मिट्टी के टोटीदार बर्तन(खोटी) में रखके आपको दे देगी ।यदि बैठक की जगह चूल्हे से दूर है और आपको डर है कि सारा मक्खन आपकी चाय में नहीं पड़ेगा, तो आप खुद जाकर चोडी में चाय मथकर ला सकते हैं ।चाय का रंग तैयार हो जाने पर फिर नमक- मक्खन डालने की ज़रूरत होती है । परित्यक्त चीनी किले से जब हम चलने लगे, तो एक आदमी राहदारी मांगने आया ।हमने वह दोनों चिटें उसे दे दीं । शायद उसी दिन हम थोड़ला के पहले के आखिरी गांव में पहुंच गए ।यहां भी सुमति के जान- पहचान के आदमी थे और भिखमंगे रहते भी ठहरने के लिए अच्छी जगह मिली ।पाँच साल बाद हम इसी रास्ते लौटे थे और भिखमंगे नहीं, एक भद्र यात्री के वेश में घोड़ों पर सवार

होकर आए थे; किंतु उस वक्त किसी ने हमें रहने के लिए जगह नहीं दी ,और हम गांव के एक सबसे गरीब झोपड़े में ठहरे थे। बहुत कुछ लोगों की उस वक्त की मनोवृति पर ही निर्भर है, खासकर शाम के वक्त गड़्ढे पीकर बहुत कम होश- हवास को दुरुस्त रखते हैं ।

शेष अगले दिन,

ध्यातव्य- यात्रा वृतांत लेखन में राहुल जी का स्थान अन्यतम है ।उन्होंने घुमक्कड़ी का शास्त्र रचा और उससे होने वाले लाभों का विस्तार से वर्णन करते हुए मंजिल के स्थान पर यात्रा को ही घुमक्कड़ का उद्देश्य बताया। संकलित अंश राहुल जी की प्रथम तिब्बत यात्रा से लिया गया है जो उन्होंने सन् 1929-30 में नेपाल के रास्ते की थी ।उस समय भारतीयों को तिब्बत यात्रा की अनुमति नहीं थी इसलिए उन्होंने यह यात्रा एक भिखमंगे के छद्म वेश में की थी ।उन्होंने यहां पर बताया है कि यात्रा के दौरान जब वह भिखमंगे के वेश में जाते हैं तो उन्हें वहाँ के वासी ठरहने की की जगह दे देते हैं परंतु पाँच

साल बाद पुनः जब वह उसी रास्ते से लौटते हैं तो थोड़ला वासी उन्हें ठहरने की जगह नहीं देते हैं जबकि इस बार वे भिखमंगे के वेश में न होकर एक एक भद्र पुरुष के वेश में घोड़े पर सवार होकर आए थे। किंतु इस बार उन्हें किसी ने भी ठहरने की जगह नहीं दी जिसके कारण वे गांव के सबसे गरीब झोपड़ी में ठहरे थे। यहां पर उन्होंने यह भी जाहिर किया है कि हो सकता है कि उस वक्त की मनोवृति ही कुछ लोगों की ऐसी होगी जो भिखमंगे होते हुए भी उनको ठहरने की जगह दे दिए। वहां जाति-पाँति, छुआछूत की कोई बात ही नहीं थी एवं वहाँ की औरतें भी पर्दा नहीं करती थीं

छात्र कार्यः

कहानी के इस अंश को अपनी आप अपनी कॉपी में लिखे एवं पढ़ें ।

कठिन शब्दः

छड़-- मादक द्रव्य पदक।

थोड़्ला-- तिब्बती सीमा का एक स्थान ।

धन्यवाद

कुमारी पिंकी "कुसुम"